

पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

सीताराम सेकसरिया: जीवन परिचय

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक चेतना के क्षेत्र में जिन व्यक्तित्वों ने मौन रहकर भी गहरा प्रभाव डाला, उनमें सीताराम सेकसरिया का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वे एक सफल व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता, स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यप्रेमी और शिक्षाविद् थे। 1892 में राजस्थान के नवलगढ़ में जन्मे सीताराम सेकसरिया का अधिकांश जीवन कोलकाता में बीता। इस लेख में हम उनके जीवन, कार्य, विचारधारा और साहित्यिक योगदान पर विस्तृत प्रकाश डालेंगे।

प्रारंभिक जीवन और पारिवारिक पृष्ठभूमि

सीताराम सेकसरिया का जन्म 1892 में राजस्थान के प्रसिद्ध मारवाड़ी क्षेत्र नवलगढ़ में हुआ। वे एक समृद्ध जैन परिवार से संबंधित थे। बाल्यकाल में ही उन्होंने पारिवारिक व्यापार में रुचि लेनी शुरू कर दी थी। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि धार्मिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक दृष्टिकोण से समृद्ध थी। हालाँकि, उन्हें औपचारिक विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला, परंतु उन्होंने स्वाध्याय के माध्यम से ही ज्ञान अर्जित किया।

शिक्षा: स्वाध्याय के बल पर आत्मनिर्भरता

सीताराम सेकसरिया ने स्वयं से पढ़ना-लिखना सीखा। उनकी आत्म शिक्षा की प्रवृत्ति ने उन्हें गहन चिंतनशील और आत्मविक्षेपी बनाया। उन्होंने केवल वाणिज्यिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि साहित्य, संस्कृति, इतिहास और सामाजिक अध्ययन में भी उत्कृष्ट ज्ञान अर्जित किया। यह उनकी विलक्षण स्मरणशक्ति और स्व-अनुशासन का परिणाम था।

व्यापारिक जीवन

कोलकाता में आकर उन्होंने पारिवारिक व्यवसाय को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। वे व्यापार में सफल तो रहे ही, परंतु उन्होंने धन को सामाजिक उत्थान का माध्यम बनाया। वे व्यापार को केवल लाभ कमाने का जरिया नहीं, बल्कि जनसेवा का साधन मानते थे। उनके प्रयासों से कोलकाता और राजस्थान के कई क्षेत्रों में नारी शिक्षा, सामाजिक संस्थाएँ और सांस्कृतिक संगठनों की स्थापना हुई।

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका

महात्मा गांधी के आह्वान पर सीताराम सेकसरिया ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की। वे सत्याग्रह आंदोलन के दौरान जेल भी गए। उन्होंने अपने आर्थिक संसाधनों और सामाजिक नेटवर्क का उपयोग कर स्वतंत्रता सेनानियों को सहयोग प्रदान किया।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

उनकी मित्रता और करीबी संबंध महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर और नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे महान व्यक्तित्वों से थे। वे इन महान विभूतियों के विचारों से प्रभावित थे और उनके साथ मिलकर राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रहे।

साहित्य, संस्कृति और शिक्षा में योगदान

सीताराम सेकसरिया को साहित्यिक रचनाओं में विशेष रुचि थी। उन्होंने कई प्रेरणादायी ग्रंथों की रचना की, जिनमें 'स्मृतिकण', 'मन की बात', 'बीता युग', 'नई याद', और 'एक कार्यकर्ता की डायरी' (दो भागों में) प्रमुख हैं। इन कृतियों में उन्होंने अपने अनुभव, सामाजिक अवलोकन और मानवीय संवेदनाओं को सरल व भावनात्मक भाषा में प्रस्तुत किया है।

प्रमुख रचनाएँ:

1. स्मृतिकण – यह कृति उनकी स्मृतियों और अनुभवों का संकलन है।
2. मन की बात – आत्मचिंतन व सामाजिक विषयों पर आधारित विचारमाला।
3. बीता युग – अतीत की घटनाओं पर आधारित ऐतिहासिक दृष्टिकोण।
4. नई याद – सामाजिक बदलाव और आत्मीय संस्मरण।
5. एक कार्यकर्ता की डायरी – उनके सामाजिक और आंदोलनात्मक अनुभवों का संकलन।

इन रचनाओं से उनके सामाजिक सरोकार, मानवीय मूल्य और आध्यात्मिक झुकाव का बोध होता है।

महिला शिक्षा और समाज सुधार

सीताराम सेकसरिया ने महिला शिक्षा को अत्यंत आवश्यक समझा। वे नारी सशक्तिकरण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कोलकाता और राजस्थान में कई नारी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना और संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रयासों के कारण समाज में महिला शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी और सामाजिक सोच में सकारात्मक बदलाव आया।

राजनीतिक दायित्व

सीताराम सेकसरिया कुछ वर्षों तक आज़ाद हिंद फौज की अस्थायी सरकार में मंत्री भी रहे। यह कार्यकाल उनके राष्ट्रीय दृष्टिकोण और कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है। उनकी राजनीतिक सक्रियता सदा राष्ट्रहित और लोकसेवा से प्रेरित रही। उन्होंने कभी पद या प्रतिष्ठा के लिए कार्य नहीं किया, बल्कि अपने कर्तव्य को सर्वोच्च माना।

राष्ट्र सम्मान: पद्मश्री पुरस्कार

भारत सरकार ने उनके समाज सेवा, साहित्यिक योगदान और राष्ट्रीय आंदोलन में सहभागिता को मान्यता देते हुए 1962 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। यह सम्मान उनके जीवन के कार्यों और समाज में दिए योगदान की एक प्रतिष्ठित स्वीकृति थी।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

वैचारिक दृष्टिकोण

सीताराम सेकसरिया एक गांधीवादी विचारधारा के समर्थक थे। उनका जीवन सादगी, सेवा, और स्वदेशी मूल्यों पर आधारित था। उन्होंने हमेशा सत्य, अहिंसा और मानव कल्याण को सर्वोच्च महत्व दिया। उनका मानना था कि समाज में स्थायी परिवर्तन केवल शिक्षा, नैतिकता और आत्मबलिदान से ही संभव है।

उनकी विचारधारा के मुख्य स्तंभ

1. आत्मनिर्भरता: शिक्षा, व्यापार और सेवा में आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा।
2. समाज सेवा: आर्थिक संसाधनों को जनहित में उपयोग करना।
3. नारी सशक्तिकरण: महिला शिक्षा और सम्मान के लिए संस्थागत प्रयास।
4. राष्ट्रवाद: स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी।
5. मानवता: साहित्य और लेखन के माध्यम से सामाजिक चेतना फैलाना।

उत्तराधिकार और प्रभाव

सीताराम सेकसरिया की प्रेरणा से उनके बाद की पीढ़ियाँ भी सामाजिक कार्यों, शिक्षा और साहित्य में योगदान देती रहीं। उनका जीवन एक आदर्श उदाहरण है कि कैसे एक व्यापारिक पृष्ठभूमि का व्यक्ति समाज, राष्ट्र और साहित्य के लिए भी उतना ही समर्पित हो सकता है।

उनके द्वारा स्थापित संस्थाएँ आज भी कार्य कर रही हैं और उनके विचारों को आगे बढ़ा रही हैं। साहित्य प्रेमियों, समाज सेवकों और शिक्षकों के लिए उनका जीवन एक प्रेरणास्रोत है।

सीताराम सेकसरिया का निधन – एक युग का अवसान

सीताराम सेकसरिया का निधन भारतीय समाज और सांस्कृतिक जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति था। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भी सामाजिक सेवा, लेखन और सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया। वृद्धावस्था के बावजूद उनका मन सदैव राष्ट्र और समाज के कल्याण में लगा रहा।

उनका निधन एक ऐसे समय हुआ जब भारत स्वतंत्र हो चुका था और सामाजिक पुनर्निर्माण के दौर से गुजर रहा था। यद्यपि उनकी मृत्यु की सटीक तिथि के ऐतिहासिक प्रमाण सीमित हैं, लेकिन यह निश्चित है कि उन्होंने 1960 के दशक के अंत तक जीवित रहते हुए समाज को प्रेरणा प्रदान की। उनके निधन के बाद देशभर के साहित्यकारों, समाजसेवियों और स्वतंत्रता सेनानियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

सीताराम सेकसरिया का जीवन सादगी, सेवा और समर्पण का प्रतीक था। उनके निधन के साथ एक ऐसा युग समाप्त हो गया, जिसमें व्यापार, समाज सेवा और राष्ट्रभक्ति एक साथ कदम से कदम मिलाकर चलती थी। उनकी स्मृति आज भी उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं और साहित्यिक रचनाओं में जीवित है।

निष्कर्ष

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

सीताराम सेकसरिया एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने व्यापार, स्वतंत्रता संग्राम, साहित्य, समाज सेवा और शिक्षा—हर क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी। उनके जीवन से यह स्पष्ट होता है कि बिना औपचारिक शिक्षा के भी व्यक्ति अपने दृढ़ संकल्प, आत्मबल और सेवा भावना के माध्यम से समाज में महान योगदान दे सकता है।

उनकी रचनाएँ, उनके विचार और उनके कार्य आज भी समाज को मार्गदर्शन देते हैं। सीताराम सेकसरिया का जीवन स्वदेश प्रेम, मानवता और कर्तव्यनिष्ठा का जीवंत उदाहरण है, जिसे समझना और अपनाना आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

प्रश्न – अभ्यास:

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1. कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था ?

उत्तर 1: 26 जनवरी 1931 को देशभर में स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा था। यह दिन कलकत्ता वासियों के लिए खास था क्योंकि इस दिन उन्हें अपनी देशभक्ति दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रश्न 2. सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था ?

उत्तर 2- सुभाष बाबू के जुलूस की जिम्मेदारी पूर्णोदास पर थी, और उन्होंने इसे बखूबी निभाया।

प्रश्न 3. विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर 3- जब विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा फहराया, तो पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और अन्य लोगों को भी पीटा या वहां से हटा दिया।

प्रश्न 4. लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

उत्तर 4- लोग अपने घरों और सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर ब्रिटिश सरकार को यह संदेश देना चाहते थे कि अब भारतीय स्वतंत्रता की ओर बढ़ रहे हैं और वे अब गुलामी नहीं चाहते।

प्रश्न 5. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

उत्तर 5- ब्रिटिश सरकार स्वतंत्रता दिवस मनाने से भारतीयों को रोकना चाहती थी, इसलिए पुलिस ने उन स्थानों को घेर लिया जहां स्वतंत्रता दिवस की सभा आयोजित होने वाली थी।

लिखित

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1. 26 जनवरी 1931 को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

उत्तर 1:

- (i) शहर की सजावट: 26 जनवरी 1931 को यादगार बनाने के लिए नागरिकों ने अपने घरों को खूबसूरती से सजाया। इसके साथ ही शहर के प्रमुख स्थलों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर अंग्रेजों को एक मजबूत संदेश दिया।
(ii) प्रचार कार्य: इस दिन को यादगार बनाने के लिए प्रचार कार्य भी किए गए थे, जिसमें लगभग दो हजार रुपये का खर्च आया।

प्रश्न 2. 'आज जो बात थी वह निराली थी' - किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 2:

- (i) लोगों की भीड़: आज तीन बजे से ही हजारों लोग मैदान में इकट्ठा होने लगे थे, और लोग समूहों में बंटकर इधर-उधर घूम रहे थे।
(ii) जोश और उत्साह: इस दिन के आयोजन में लोगों में अपार जोश और उत्साह था, जिससे साफ़ जाहिर हो रहा था कि यह दिन सामान्य नहीं था।

प्रश्न 3. पुलिस कमिश्नर के नोटिस व कौंसिल के नोटिस में क्या अन्तर था ?

उत्तर 3:

- (i) पुलिस कमिश्नर का नोटिस: पुलिस कमिश्नर ने यह नोटिस जारी किया था कि किसी विशेष धारा के तहत इस दिन कोई सभा आयोजित नहीं की जा सकती थी।
(ii) कौंसिल का नोटिस: कौंसिल का नोटिस था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर ध्वजारोहण किया जाएगा और स्वतंत्रता की शपथ ली जाएगी।

प्रश्न 4. धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

उत्तर 4:

- (i) कई लोग घायल हुए: अत्यधिक भीड़ के कारण बहुत से लोग घायल हो गए, जिससे जुलूस थोड़ा बिखर गया।
(ii) महिलाओं का रुकना: पुलिस द्वारा लाठियाँ चलाए जाने के कारण महिलाएँ धर्मतल्ले के मोड़ पर रुक गईं, और लगभग 50-60 महिलाएँ वहीं बैठ गईं।

प्रश्न 5. डॉ. दासगुसा जुलूस में घायल लोगों की देखरेख तो कर ही रहे थे उनके फोटो भी उतरवा रहे थे, उन लोगों के फोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 5:

- (i) सबूत के रूप में: पुलिस की लाठियों से घायल लोग अपराधी नहीं थे, बल्कि वे स्वतंत्रता सेनानी और देशभक्त थे। उनके घावों के फोटो खींचकर यह सुनिश्चित किया गया कि उनके संघर्ष के प्रमाण मौजूद रहें, जो भविष्य में अदालत में दिखाए जा सकें और ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में संग्रहित किए जा सकें।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

(ii) अंग्रेजी शासन के अत्याचारों का खुलासा: ये फोटो अंग्रेजी शासन के द्वारा किए गए जुल्मों की दास्तान को उजागर करने के लिए खींचे गए थे।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) दीजिए-

प्रश्न 1. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

उत्तर 1:

(i) स्त्रियों की अहम भूमिका – सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्रियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी दिखाई। वे जगह-जगह से अपने जुलूस निकालने और निर्धारित स्थान पर पहुँचने के लिए पूरी तरह से प्रयासरत थीं।

(ii) बलिदान की भावना – इस जुलूस में स्त्री समाज ने जोरदार भागीदारी करके यह साबित किया कि भारत और बंगाल की महिलाएं पुरुषों से कम नहीं हैं, और वे देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने के लिए तैयार हैं।

प्रश्न 2. जुलूस के लालबाजार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

उत्तर 2:

(i) गोयनका की गिरफ्तारी – जब प्रदर्शनकारी लालबाजार की ओर बढ़ रहे थे, पुलिस ने उन्हें पकड़कर थाने ले जाने का प्रयास किया। वृजलाल गोयनका, जो गंभीर रूप से घायल थे, को पुलिस ने पकड़ा और फिर छोड़ दिया, लेकिन थाने में उनकी पिटाई की गई। इसके बाद वे दो सौ लोगों के साथ जुलूस में शामिल हुए और फिर गिरफ्तार हो गए।

(ii) मदालसा और अन्य महिलाओं की गिरफ्तारी – मदालसा समेत 105 महिलाओं को भी गिरफ्तार किया गया। इस जुलूस में बड़ी संख्या में लोग सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे।

प्रश्न 3. 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी, और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर 3:

(i) पुलिस कमिश्नर द्वारा लगाए गए कानून का उल्लंघन – सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में स्वतंत्रता सेनानियों ने सरकार के खिलाफ संघर्ष किया था। पुलिस कमिश्नर ने सभा करने पर प्रतिबंध लगाते हुए कड़े कानून लागू किए थे, लेकिन कौंसिल ने इन कानूनों का उल्लंघन करते हुए सभा करने का निर्णय लिया।

(ii) कानून का उल्लंघन उचित था – जिन कानूनों को लागू किया गया था, वे जनता की भावनाओं का अपमान करने वाले थे। इन कानूनों का उल्लंघन जनता की भावनाओं के अनुरूप था, इसीलिए इसे उचित माना गया।

प्रश्न 4. बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत सी स्त्रियाँ जेल गईं, और फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर 4:

(i) देश के लिए बलिदान – 26 जनवरी, 1931 का दिन भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का प्रतीक था। इस दिन

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

कई लोग घायल हुए, जेल गए और कुछ तो बलिदान हो गए। यह अवसर देशभक्तों के लिए गौरवपूर्ण होता है क्योंकि ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते। इसलिए इस दिन को अपूर्व माना गया।

(ii) स्वतंत्रता की प्राप्ति और बलिदान – स्वतंत्रता केवल संघर्ष और बलिदान से ही प्राप्त होती है, और यह स्वतंत्रता उन देश भक्तों के लिए अपूर्व होती है जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

1. आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।

उत्तर 1: आशय: 26 जनवरी 1931 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, कलकत्ता के लोग, चाहे वे पुरुष हों या महिलाएँ, एकजुट होकर स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की परवाह किए बिना सड़कों पर उतरे। उन्हें न तो सरकारी ताकतों का डर था, न पुलिस का। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। इससे पहले कलकत्ता को एक कमजोर जगह माना जाता था, लेकिन अब वहाँ के लोगों ने अपनी वीरता और साहस से उस बदनामी को मिटा दिया। इसलिए यह घटना अपूर्व थी।

2. खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

उत्तर 2: आशय: उस समय देश में अंग्रेजों का शासन था और लोग स्वतंत्रता की आकांक्षा में व्याकुल थे। इसी कारण उन्होंने स्वतंत्रता दिवस मनाया। हालांकि वे स्वतंत्र नहीं थे, फिर भी इस दिन ने सरकारी शासन को खुला चुनौती दी। यह एक साहसिक कदम था, जिसे पहले कभी नहीं उठाया गया था।

भाषा अध्ययन

प्रश्न 1. रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते-

सरल वाक्य - सरल वाक्य में कर्ता कर्म पूरक क्रिया और क्रियाविशेषण घटको या इनमें से कुछ घटकों का योग होता है। स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य ही सरल वाक्य है।

उदाहरण - लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे।

संयुक्त वाक्य - जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र या उपवाक्य समानाधिकरण योजक से जुड़े हों, वह संयुक्त वाक्य कहलाता है। योजक शब्द- और, परंतु, इसलिए आदि।

उदाहरण - मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

मिश्र वाक्य - वह वाक्य जिसमें एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हो, मिश्र वाक्य कहलाता है।

उदाहरण- जब अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तब पुलिस ने उनको पकड़ लिया।

निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए-

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

I. (क) दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाज़ार गया और वहाँ पर गिरफ्तार हो गया।

(ख) मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदान में घूमने लगे।

(ग) सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया।

II. 'बड़े भाई साहब' पाठ में से भी दो-दो सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य छाँटकर लिखिए।

उत्तर - I.

उत्तर (क): दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाज़ार गया और वहाँ गिरफ्तार हो गया।

उत्तर (ख): मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर घूमने लगे।

उत्तर (ग): सुभाष बाबू को पकड़कर गाड़ी में बैठाकर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया।

II. 'बड़े भाई साहब' पाठ से सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य छांट कर लिखिए।

सरल वाक्य:

(i) घुड़सवारों का प्रबंध था।

(ii) ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू जुलूस लेकर आए।

संयुक्त वाक्य:

(i) अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और लोगों को मारा या हटा दिया।

(ii) वृजलाल गोयनका, जो कई दिन से अपने साथ काम कर रहे थे, दमदम जेल में भी उनके साथ थे।

मिश्र वाक्य:

(i) हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए, पर वे भीतर न जा सके।

(ii) मोनुमेंट के पास जैसा प्रबंध भोर में था, वैसा करीब एक बजे नहीं था।

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्य संरचनाओं को ध्यान से पढ़िए और समझिए कि जाना, रहना और चुकना क्रियाओं का प्रयोग किस प्रकार किया गया है।

(क)

1. कई मकान सजाए गए थे।

2. कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए थे।

(ख)

1. बड़े बाजार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था।

2. कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

3. पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी।

(ग)

1. सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था, वह प्रबंध कर चुका था।

2. पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था।

उत्तर 2: (क) वाक्य संरचनाएं:

1. कई मकान सजाए गए थे।

- जाना का प्रयोग गए (गया) रूप में हुआ है, जिसका अर्थ है कि किसी क्रिया को संपन्न किया गया या किया जा चुका है। यहां यह क्रिया सजाए जाने की प्रक्रिया को इंगित करती है, जो पहले पूरी हो चुकी है।

2. कलकत्ते के प्रत्येक भाग में झंडे लगाए गए थे।

- जाना का प्रयोग गए रूप में किया गया है। यह एक कृत्य या क्रिया की समाप्ति को दर्शाता है, यहां यह बताता है कि झंडे लगाने का काम पहले किया जा चुका था।

(ख) वाक्य संरचनाएं:

1. बड़े बाजार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था।

- रहना का प्रयोग रहा रूप में हुआ है, जो कि एक निरंतर क्रिया या स्थिति को दर्शाता है। यह वाक्य बताता है कि झंडा फहरा रहा था, यह एक स्थायी या निरंतर क्रिया थी।

2. कितनी ही लारियाँ शहर में घुमाई जा रही थीं।

- रहना का प्रयोग रही (रहीं) रूप में हुआ है, यह क्रिया की निरंतरता को दर्शाता है। लारियाँ चलती जा रही थीं, अर्थात् यह घटना तब चल रही थी।

3. पुलिस भी अपनी पूरी ताकत से शहर में गश्त देकर प्रदर्शन कर रही थी।

- रहना का प्रयोग रही रूप में हुआ है, जो एक क्रिया के निरंतर होने की स्थिति को दर्शाता है। यहां पुलिस का प्रदर्शन चलता हुआ था, एक क्रिया थी जो आगे बढ़ रही थी।

(ग) वाक्य संरचनाएं:

1. सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था, वह प्रबंध कर चुका था।

- चुकना का प्रयोग चुका रूप में हुआ है, जो कि यह दर्शाता है कि किसी क्रिया का समापन हो चुका है। यहां पूर्णोदास ने पहले ही जुलूस का प्रबंध कर लिया था।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

2. पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था।

- चुकना का प्रयोग चुका रूप में हुआ है, जो यह बताता है कि नोटिस पहले ही जारी हो चुका था, यानि क्रिया पूरी हो चुकी थी।

सारांश:

- जाना क्रिया का प्रयोग क्रिया के संपन्न होने, खत्म होने के संदर्भ में किया जाता है।
- रहना क्रिया का प्रयोग क्रिया की निरंतरता या स्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता है।
- चुकना क्रिया का प्रयोग किसी कार्य के समाप्त या पूर्ण होने के संदर्भ में किया जाता है।

प्रश्न 8. नीचे दिए गए शब्दों की संरचना पर ध्यान दीजिए-

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

'विद्या' शब्द का अंतिम स्वर 'आ' और दूसरे शब्द 'अर्थी' की प्रथम स्वर ध्वनि 'अ' जब मिलते हैं तो वे मिलकर दीर्घ स्वर 'आ' में बदल जाते हैं। यह स्वर संधि है जो संधि का ही एक प्रकार है।

संधि शब्द का अर्थ है- जोड़ना। जब दो शब्द पास-पास आते हैं तो पहले शब्द की अंतिम ध्वनि बाद में आने वाले शब्द की पहली ध्वनि से मिलकर उसे प्रभावित करती है। ध्वनि परिवर्तन की इस प्रक्रिया को अधि कहते हैं। संधि तीन प्रकार की होती है-स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि। जब संधि युक्त पदों को अलग-अलग किया जाता है तो उसे संधि विच्छेद कहते हैं;

जैसे- विद्यालय = विद्या + आलय

नीचे दिए गए शब्दों की संधि कोजिए-

1. श्रद्धा + आनंद
2. प्रति + एक
3. पुरुष + उत्तम
4. झंडा + उत्सव
5. पुनः + आवृत्ति
8. ज्योति + मय

उत्तर 8: यहां दिए गए शब्दों की संधि इस प्रकार होगी:

1. श्रद्धा + आनंद = श्रद्धानंद (स्वर संधि)

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

2. प्रति + एक = प्रत्येक (स्वर संधि)
3. पुरुष + उत्तम = पुरुषोत्तम (व्यंजन संधि)
4. झंडा + उत्सव = झंडोत्सव (स्वर संधि)
5. पुनः + आवृत्ति = पुनरावृत्ति (स्वर संधि)
6. ज्योति + मय = ज्योतिमय (स्वर संधि)

इन शब्दों में संधि का प्रभाव मुख्यतः स्वर संधि का होता है, जहां दो शब्दों की ध्वनियां मिलकर एक नई ध्वनि उत्पन्न करती हैं।

योग्यता विस्तार

1. भौतिक रूप से दबे हुए होने पर भी अंग्रेजों के समय में ही हमारा मन आजाद हो चुका था। अतः दिसंबर सन् 1929 में लाहौर में कांग्रेस का एक बड़ा अधिवेशन हुआ, इसके सभापति जवाहर लाल नेहरू थे। इस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास किया गया कि अब 'हम 'पूर्ण स्वराज्य' से कुछ भी कम स्वीकार नहीं करेंगे। 26 जनवरी "1930 की देशवासियों ने पूर्ण स्वतंत्रता के लिए हर प्रकार के बलिदान की प्रतिज्ञा की। उसके बाद आजादी प्राप्त होने तक प्रतिवर्ष 25 जनवरी की स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। आजादी मिलने के बाद 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा ।

उत्तर 1- यह वाक्यांश भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण मोड़ और राष्ट्रीय संघर्ष को दर्शाता है। 1929 में लाहौर कांग्रेस अधिवेशन के माध्यम से भारतीय नेतृत्व ने स्वराज्य की पूर्ण मांग को प्रस्तुत किया। इस निर्णय ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया दिशा दी।

26 जनवरी 1930 को भारत के नागरिकों ने पूर्ण स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की शपथ ली, और यह दिन स्वाधीनता आंदोलन का प्रतीक बन गया। इस ऐतिहासिक घटना के बाद हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है, जबकि पहले यह दिन स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाया जाता था।

आपके द्वारा दिया गया वाक्य इस समय के महत्व और स्वतंत्रता संग्राम की गंभीरता को व्यक्त करता है, जो भारतीय जनता के दृढ़ संकल्प और संघर्ष का प्रतीक है।

2. डायरी - यह गद्य की एक विधि है। इसमें दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं, अनुभवों को वर्णित किया जाता है। आप भी अपनी दैनिक जीवन से संबंधित घटनाओं को डायरी में लिखने का अभ्यास करें।

उत्तर 2- डायरी लेखन एक बहुत ही व्यक्तिगत और प्रभावी तरीका है अपनी भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने का। इसमें आप अपनी रोज की जिन्दगी, घटनाओं, विचारों, और भावनाओं को लिख सकते हैं। यह आत्म-विश्लेषण और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद हो सकता है।

आप अपनी डायरी में क्या लिख सकते हैं:

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

1. दैनिक घटनाएँ: आपके दिन की महत्वपूर्ण घटनाएँ, जो आपके लिए खास हों, जैसे किसी मित्र से मुलाकात, परिवार के साथ समय बिताना, या कोई नया अनुभव।
2. भावनाएँ और विचार: अपने दिनभर के अनुभवों पर आपकी प्रतिक्रियाएँ, जो आपके मन में चल रहे हों। यह आपके अंदर की भावनाओं को समझने और उनका विश्लेषण करने में मदद कर सकता है।
3. लक्ष्य और योजनाएँ: अपने जीवन के उद्देश्य, लक्ष्य, और उन तक पहुंचने के लिए बनाई गई योजनाएँ।
4. आध्यात्मिक या मानसिक विचार: आपकी मानसिक स्थिति या जीवन के प्रति दृष्टिकोण पर विचार।

डायरी लेखन से आप न केवल अपनी आत्म-चिंतन की प्रक्रिया को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि यह आपको एक दिन अपनी यादों को सहेजने का एक अच्छा तरीका भी देता है।

3. जमना लाल बजाज महात्मा गाँधी के पाँचवें पुत्र के रूप में जाने जाते हैं, क्यों? अध्यापक से जानकारी प्राप्त करें।

उत्तर 3: जमनालाल बजाज और महात्मा गांधी का रिश्ता गुरु और शिष्य का था, लेकिन यह संबंध बेहद गहरा और पारिवारिक भी बन गया। जमनालाल बजाज को महात्मा गांधी का "पांचवां पुत्र" कहा जाता है क्योंकि उन्होंने गांधी जी के विचारों को पूरी तरह आत्मसात किया और उनके आदर्शों पर चलकर अपने जीवन को समाजसेवा के लिए समर्पित कर दिया।

जमनालाल बजाज के बारे में:

- जमनालाल बजाज एक प्रमुख भारतीय उद्योगपति, समाजसेवी और स्वतंत्रता सेनानी थे।
- उन्होंने अपनी संपत्ति और जीवन को गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए समर्पित कर दिया।
- उन्होंने गांधी जी के कार्यक्रमों, जैसे स्वदेशी आंदोलन, हरिजन सेवा, और ग्रामोद्योग को आर्थिक और नैतिक समर्थन दिया।

महात्मा गांधी के साथ संबंध:

- गांधी जी ने जमनालाल बजाज के सादगी, त्याग और समाज के प्रति उनके समर्पण की सराहना की।
- गांधी जी को जब सेवाग्राम आश्रम की स्थापना करनी थी, तो जमनालाल ने उन्हें अपनी जमीन दी और हर संभव मदद की।
- उनके आपसी विश्वास और समान विचारधारा के कारण, गांधी जी उन्हें अपने "पांचवें पुत्र" के रूप में मानते थे, जो पारिवारिक संबंधों से परे एक गहरा जुड़ाव दिखाता है।

निष्कर्ष:

जमनालाल बजाज का गांधी जी के प्रति निष्ठा और उनके आदर्शों को अपनाना ही उन्हें गांधी जी का "पांचवां

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरयिा (डायरी का एक पन्ना)

पुत्र" बनाता है। यह उपाधि उनकी गहरी मित्रता, पारिवारिक भावना और राष्ट्रीय सेवा के प्रति समर्पण को दर्शाती है।

4. ढाई लाख का जानकी देवी पुरस्कार जमना लाल बजाज फाउंडेशन द्वारा पूरे भारत में सराहनीय कार्य करने वाली महिलाओं को दिया जाता है। यहाँ ऐसी कुछ महिलाओं के नाम दिए जा रहे हैं-

श्रीमती अनुताई लिमये 1993 महाराष्ट्र; सरस्वती गोरा 1996 आंध्र प्रदेश; मीना अग्रवाल 1998 असम; सिस्टर मैथिली 1999 केरल कुंतला कुमारी आचार्य 2001 उड़ीसा।

इनमें से किसी एक के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर 4- जानकी देवी बजाज पुरस्कार जमना लाल बजाज फाउंडेशन द्वारा दिया जाता है। यह पुरस्कार उन महिलाओं को सम्मानित करता है जिन्होंने ग्रामीण विकास, महिलाओं की प्रगति, और सामाजिक कार्यों में असाधारण योगदान दिया है। इस पुरस्कार का उद्देश्य भारत में महिला सशक्तिकरण और समाज सुधार के प्रयासों को प्रेरित करना है।

यहाँ दी गई महिलाओं में से दो के बारे में संक्षिप्त जानकारी:

1. सरस्वती गोरा (1996, आंध्र प्रदेश)

- परिचय: सरस्वती गोरा एक समाज सुधारक थीं, जो आंध्र प्रदेश में सामाजिक कुरीतियों और जातिवाद के खिलाफ लड़ने में अग्रणी रहीं।
- योगदान:
 - उन्होंने अंधविश्वास और जातिगत भेदभाव के उन्मूलन के लिए काम किया।
 - उन्होंने महात्मा गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन करते हुए सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया।
 - "अथीस्ट सेंटर" (नास्तिक केंद्र) के माध्यम से उन्होंने नारी सशक्तिकरण और सामाजिक जागरूकता पर काम किया।
- विरासत: उनके कार्यों ने न केवल आंध्र प्रदेश बल्कि पूरे भारत में समाज सुधार के आंदोलन को प्रभावित किया।

2. सिस्टर मैथिली (1999, केरल)

- परिचय: सिस्टर मैथिली एक समर्पित समाजसेवी और धर्मगुरु थीं, जिन्होंने केरल में गरीबों और वंचितों के लिए काम किया।
- योगदान:

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

- उन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाने के लिए प्रयास किए।
- महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए।
- उनके काम में परोपकार और मानवता के प्रति गहरी निष्ठा झलकती है।
- विरासत: उनके कार्य आज भी कई सामाजिक संगठनों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

परियोजना कार्य

1. स्वतंत्रता आंदोलन में निम्नलिखित महिलाओं ने जो योगदान दिया, उसके बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करके लिखिए-

(क) सरोजिनी नायडू: सरोजिनी नायडू को "नाइटिंगेल ऑफ इंडिया" के नाम से जाना जाता है। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक प्रमुख नेता थीं।

- 1916 में उन्होंने महात्मा गांधी के साथ स्वतंत्रता के लिए आंदोलन किया।
- 1925 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनीं।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।
- आज़ादी के बाद वे भारत की पहली महिला राज्यपाल बनीं।

(ख) अरुणा आसफ अली: अरुणा आसफ अली "भारत छोड़ो आंदोलन" की प्रमुख नेता थीं।

- 1942 में उन्होंने मुंबई के गवालिया टैंक मैदान में तिरंगा फहराकर आंदोलन का नेतृत्व किया।
- उन्हें "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गैंड ओल्ड लेडी" कहा गया।
- स्वतंत्रता के बाद उन्होंने सामाजिक और महिला अधिकारों के लिए काम किया।
- भारत सरकार ने उन्हें 1997 में मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया।

(ग) कस्तूरबा गाँधी: कस्तूरबा गांधी, महात्मा गांधी की पत्नी थीं और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनका बड़ा योगदान रहा।

- उन्होंने सत्याग्रह आंदोलनों में महिलाओं को संगठित किया।
- दक्षिण अफ्रीका में अश्वेतों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।
- 1930 के दांडी मार्च और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी सक्रिय भाग लिया।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

- उनके संघर्ष ने महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

2. इस पाठ के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में कलकत्ता (कोलकाता) के योगदान का चित्र स्पष्ट होता है। आज़ादी के आंदोलन में आपके क्षेत्र का भी किसी न किसी प्रकार का योगदान रहा होगा। पुस्तकालय, अपने परिचितों या फिर किसी दूसरे स्रोत से इस संबंध में जानकारी हासिल कर लिखिए।

उत्तर 2- कंझावला (दिल्ली) का आज़ादी के आंदोलन में योगदान ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण रहा है। यह क्षेत्र स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों का केंद्र रहा। यहां के लोगों ने देशभक्ति और साहस का प्रदर्शन करते हुए ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद की।

कंझावला का योगदान:

1. 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम:

- कंझावला के लोग 1857 के विद्रोह में सक्रिय रहे। इस क्षेत्र के ग्रामीणों ने अंग्रेजी सेना के खिलाफ विद्रोही सैनिकों को मदद दी।
- स्थानीय लोग गुप्त रूप से स्वतंत्रता सेनानियों को भोजन, आश्रय और संसाधन उपलब्ध कराते थे।

2. गांधी जी के असहयोग आंदोलन:

- 1920 के दशक में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के आह्वान पर, कंझावला के ग्रामीणों ने विदेशी सामान का बहिष्कार किया और स्वदेशी वस्त्र अपनाए।
- यहां के किसान अंग्रेजों द्वारा लगाए गए भारी करों के खिलाफ संगठित हुए और आंदोलन में भाग लिया।

3. क्रांतिकारी गतिविधियां:

- कंझावला के युवा भगत सिंह, राजगुरु और चंद्रशेखर आज़ाद जैसे क्रांतिकारियों से प्रेरित होकर ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए तैयार हुए।
- इस क्षेत्र में गुप्त बैठकों और क्रांतिकारी योजनाओं को अंजाम दिया गया।

4. भारत छोड़ो आंदोलन (1942):

- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में कंझावला के निवासियों ने बढ-चढकर हिस्सा लिया। यहां के ग्रामीणों ने अंग्रेजों के आदेशों का बहिष्कार किया और प्रशासन को ठप करने में मदद की।

5. महिलाओं की भूमिका:

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

- इस आंदोलन में कंझावला की महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने सत्याग्रह में हिस्सा लिया और स्वतंत्रता सेनानियों का मनोबल बढ़ाया।

स्मारक और यादें:

आज भी कंझावला के कुछ बुजुर्गों की कहानियों और लोक कथाओं में स्वतंत्रता आंदोलन की झलक मिलती है। इस क्षेत्र के वीर सपूतों की गाथाएं स्थानीय स्मृतियों में अमर हैं।

कंझावला के इस योगदान ने स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूती दी और यह क्षेत्र भारत के स्वतंत्रता संग्राम के गौरवशाली इतिहास का हिस्सा बन गया।

3. 'केवल प्रचार में दो हजार रुपया खर्च किया गया था।' तत्कालीन समय को मद्देनजर रखते हुए अनुमान लगाइए कि प्रचार-प्रसार के लिए किन माध्यमों का उपयोग किया गया होगा?

उत्तर 3- तत्कालीन समय को ध्यान में रखते हुए, जब प्रचार में केवल दो हजार रुपये खर्च किए गए थे, उस समय उपलब्ध प्रचार माध्यम सरल और पारंपरिक रहे होंगे। अनुमान लगाया जा सकता है कि निम्नलिखित माध्यमों का उपयोग किया गया होगा:

1. पोस्टर और पंफलेट्स:

कम लागत वाले मुद्रण सामग्री जैसे पोस्टर और पंफलेट छपवाकर जन-जन तक संदेश पहुंचाया जाता था। इन्हें सार्वजनिक स्थानों, बाजारों और चौपालों पर लगाया या बांटा जाता था।

2. प्रचार रैलियां और सभाएं:

स्थानीय स्तर पर जनसभाएं आयोजित कर और नुक्कड़ नाटकों का सहारा लेकर लोगों तक संदेश पहुंचाया जाता था। इसमें अतिरिक्त लागत कम होती थी।

3. हाथ से लिखे पोस्टर और दीवार लेखन:

दीवारों पर प्रचार नारे और संदेश हाथ से लिखे जाते थे, जो उस समय के आम प्रचार माध्यमों में शामिल थे।

4. मेगाफोन या लाउडस्पीकर का उपयोग:

सस्ते और प्रभावी तरीके से संदेश फैलाने के लिए लाउडस्पीकर का उपयोग किया जाता था। साइकिल या रिक्शे पर लाउडस्पीकर लगाकर गली-मोहल्लों में प्रचार किया जाता था।

5. प्रचार गीत और नारे:

गीतों और नारों का सहारा लेकर भावनात्मक जुड़ाव बनाया जाता था। ये लोगों को जल्दी आकर्षित करते थे और याद रखने में आसान होते थे।

6. मौखिक प्रचार:

सीधे लोगों से मिलकर, समूहों में चर्चा करके, और पंचायतों के माध्यम से प्रचार किया जाता था। यह तरीका तब बेहद प्रचलित था।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

7. स्थानीय मेलों और त्योहारों का उपयोग:

मेलों और धार्मिक आयोजनों में प्रचार करना सस्ता और प्रभावी तरीका था, क्योंकि वहां बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा होते थे।

उस समय के संदर्भ में इन माध्यमों को ही प्राथमिकता दी जाती थी, क्योंकि वे किफायती और प्रभावशाली दोनों थे।

4. आपको अपने विद्यालय में लगने वाले पल्स पोलियो केन्द्र की सूचना पूरे मोहल्ले को देनी है। आप इस बात का प्रचार बिना पैसे के कैसे कर पाएँगे? उदाहरण के साथ लिखिए।

उत्तर 4- पल्स पोलियो अभियान के लिए सूचना पूरे मोहल्ले में बिना पैसे के प्रचारित करने के लिए निम्नलिखित तरीकों का उपयोग किया जा सकता है:

1. मौखिक प्रचार:

- छात्रों और शिक्षकों को मोहल्ले के लोगों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क करने के लिए प्रेरित करें।
- समूह बनाकर घर-घर जाकर लोगों को जागरूक करें।
- उदाहरण: "नमस्ते, हम आपके पड़ोस के विद्यालय से आए हैं। हमारे विद्यालय में पल्स पोलियो केन्द्र का आयोजन हो रहा है। कृपया 0 से 5 वर्ष के बच्चों को 14 दिसंबर को दवा पिलाने के लिए लेकर आएं।"

2. समूह घोषणाएँ:

- लाउडस्पीकर या माइक के बिना भी सार्वजनिक स्थानों (पार्क, चौपाल, आदि) पर लोगों को समूह में एकत्र कर जानकारी दी जा सकती है।
- उदाहरण: "ध्यान दें, ध्यान दें! आपके बच्चों की सुरक्षा के लिए पल्स पोलियो अभियान के तहत दवा पिलाने की व्यवस्था आपके विद्यालय में की गई है। कृपया 0 से 5 साल के बच्चों को लेकर 14 दिसंबर को विद्यालय आएं।"

3. पोस्टर और हाथ से बने बैनर:

- छात्रों और शिक्षकों से पोस्टर या बैनर बनवाएं और मोहल्ले के प्रमुख स्थानों पर चिपकाएं।
- उदाहरण: "पल्स पोलियो अभियान - अपने बच्चों को पोलियो से बचाएं। समय: सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक। स्थान: राजकीय प्राथमिक विद्यालय।"

4. सोशल मीडिया और मैसेजिंग ऐप्स का उपयोग:

- अगर मोहल्ले में व्हाट्सएप ग्रुप या फेसबुक पेज है, तो उस पर संदेश साझा करें।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

- उदाहरण: "सभी अभिभावकों को सूचित किया जाता है कि पल्स पोलियो केन्द्र का आयोजन हमारे विद्यालय में 14 दिसंबर को किया जा रहा है। कृपया 0 से 5 वर्ष के बच्चों को लेकर आएं।"

5. सहयोगी नेटवर्क का उपयोग:

- स्थानीय दुकानदारों, मंदिरों, मस्जिदों, और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर संदेश फैलाएं।
- उदाहरण: "दुकानदारों से अनुरोध करें कि वे ग्राहकों को विद्यालय में पल्स पोलियो केन्द्र की सूचना दें।"

6. विद्यालय के छात्रों का योगदान:

- छात्रों से अनुरोध करें कि वे अपने घरों और पड़ोस में लोगों को यह जानकारी दें।
- उदाहरण: "कक्षा 5 के छात्र श्याम ने अपने मोहल्ले में जाकर बताया: 'हमारे विद्यालय में पल्स पोलियो अभियान हो रहा है, आप अपने छोटे बच्चों को लेकर जरूर आएं।'"

इन सरल और सृजनात्मक तरीकों से आप बिना पैसे खर्च किए सूचना का प्रचार कर सकते हैं।

पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना) पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर, सारांश

पाठ: डायरी का एक पन्ना - सारांश

'डायरी का एक पन्ना' पाठ स्वतंत्रता संग्राम के संघर्षपूर्ण समय की जीवंत झलक प्रस्तुत करता है। इसके लेखक सीताराम सेकसरिया, नवलगढ़ (राजस्थान) में जन्मे और कोलकाता में सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी और साहित्यकार थे। उन्होंने विद्यालयी शिक्षा नहीं ली, परंतु स्वाध्याय से ज्ञान प्राप्त किया। वे महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और रवींद्रनाथ ठाकुर के निकट सहयोगी रहे। स्वतंत्रता संग्राम में बढ-चढकर भाग लिया और सत्याग्रह में जेल भी गए।

यह पाठ लेखक की 26 जनवरी 1931 की डायरी का अंश है, जिसमें कलकत्ता में दूसरे स्वतंत्रता दिवस की घटनाओं का वर्णन है। इस दिन लाखों देशभक्तों ने अंग्रेजी शासन के विरोध में झंडा फहराया, जुलूस निकाले और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा ली। पुलिस ने इस आंदोलन को कुचलने के लिए लाठियाँ चलाई, स्त्रियों और युवाओं पर अत्याचार किए। स्वयं सुभाष चंद्र बोस घायल हुए और गिरफ्तार भी किए गए।

इस पाठ के माध्यम से हमें यह सीख मिलती है कि संगठित और संकल्पित समाज कुछ भी कर सकता है। यह पाठ देशभक्तों की बलिदान-गाथा, साहस, और आत्मबलिदान की प्रेरक झलक है, जो आज भी हम सभी को राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता के महत्व का बोध कराता है।

सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना) पर आधारित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. सीताराम सेकसरिया का स्वतंत्रता संग्राम में क्या योगदान था?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय कार्यकर्ता थे। उन्होंने महात्मा गांधी के आह्वान पर सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और जेल भी गए। वे कोलकाता में रहकर देशभक्ति गतिविधियों में सक्रिय रहे। वे कई साहित्यिक, सांस्कृतिक और महिला शिक्षण संस्थाओं के प्रेरक और संचालक भी थे। उनका योगदान भारतीय समाज और स्वतंत्रता आंदोलन दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा।

प्रश्न 2. 26 जनवरी 1931 को कोलकाता में स्वतंत्रता दिवस कैसे मनाया गया?

उत्तर: 26 जनवरी 1931 को कोलकाता में स्वतंत्रता दिवस अत्यंत उत्साह और तैयारी के साथ मनाया गया। जगह-जगह राष्ट्रीय झंडा फहराया गया और मकानों को सजाया गया। लोगों ने झंडा उत्सव में भाग लिया, जुलूस निकाले गए, और देशभक्ति नारों से वातावरण गूंज उठा। महिलाओं और छात्रों की सक्रिय भागीदारी ने इस आयोजन को एक संगठित और जोशीले आंदोलन में बदल दिया।

प्रश्न 3. पाठ में सुभाषचंद्र बोस की भूमिका कैसी रही?

उत्तर: सुभाषचंद्र बोस इस आंदोलन में अग्रणी भूमिका में थे। उन्होंने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जुलूस का नेतृत्व किया। पुलिस की चेतावनी के बावजूद वे पीछे नहीं हटे और "वंदे मातरम्" के नारे लगाते रहे। लाठीचार्ज में घायल होने के बावजूद उनका साहस अडिग रहा। उनका यह बलिदान देशप्रेम का प्रतीक बन गया और जनता में जोश भरने का कार्य किया।

प्रश्न 4. स्वतंत्रता दिवस पर महिलाओं की क्या भूमिका रही?

उत्तर: महिलाओं ने स्वतंत्रता दिवस मनाने में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने जुलूस निकाले, झंडा फहराया और पुलिस के अत्याचारों का साहसपूर्वक सामना किया। तारा सुंदरी पार्क और अन्य स्थानों पर महिलाओं पर लाठियाँ बरसीं, फिर भी वे पीछे नहीं हटीं। उनकी यह भागीदारी देशभक्ति का एक प्रेरणादायक उदाहरण है, जो महिला सशक्तिकरण का भी संदेश देती है।

प्रश्न 5. 'डायरी का एक पन्ना' पाठ में पुलिस की भूमिका कैसी रही?

उत्तर: पाठ में पुलिस की भूमिका दमनकारी दिखाई गई है। उसने स्वतंत्रता दिवस की शांतिपूर्ण गतिविधियों को हिंसा से दबाने का प्रयास किया। सुभाषचंद्र बोस के जुलूस पर लाठीचार्ज किया गया, महिलाओं और छात्रों को गिरफ्तार किया गया, और कई लोग घायल हुए। इससे स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश सरकार देशवासियों की आजादी की भावना से कितनी भयभीत थी।

प्रश्न 6. पाठ में लेखक की भाषा-शैली की विशेषताएँ क्या हैं?

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

उत्तर: लेखक की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है। उन्होंने डायरी शैली में घटनाओं का जीवंत वर्णन किया है। देशभक्ति, साहस और जन भागीदारी को वे प्रभावशाली शब्दों में प्रस्तुत करते हैं। घटनाएँ पाठक को घटनास्थल पर होने का अनुभव कराती हैं। उनकी शैली आत्मकथात्मक होते हुए भी ऐतिहासिक महत्व की जानकारी देती है।

प्रश्न 7. सीताराम सेकसरिया ने शिक्षा कैसे प्राप्त की?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया को औपचारिक विद्यालयी शिक्षा का अवसर नहीं मिला। उन्होंने स्वाध्याय से ही पढ़ना-लिखना सीखा। उन्होंने अपने अनुभवों और अध्ययन से ज्ञान अर्जित किया और आगे चलकर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं, जैसे "स्मृतिकण", "मन की बात", "बीता युग" और "एक कार्यकर्ता की डायरी"। उनका स्वाध्याय का यह मार्ग प्रशंसनीय है।

प्रश्न 8. सीताराम सेकसरिया के साहित्यिक योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर: सीताराम सेकसरिया ने कई महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं, जिनमें "स्मृतिकण", "मन की बात", "बीता युग", "नयी याद" और "एक कार्यकर्ता की डायरी" शामिल हैं। इन कृतियों में उन्होंने अपने अनुभवों, विचारों और स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं को सरल, सजीव भाषा में प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य देशभक्ति, विचारशीलता और सामाजिक चेतना का दस्तावेज है।

प्रश्न 9. पाठ में "एक संगठित समाज दृढ़ संकल्प हो तो कुछ भी असंभव नहीं" – इस विचार को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: पाठ में बताया गया है कि किस प्रकार कोलकाता के लोग संगठित होकर स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। सुभाष बाबू, महिलाएँ और युवक मिलकर झंडा फहराने, जुलूस निकालने और सभा आयोजित करने का साहस दिखाते हैं। पुलिस दमन के बावजूद वे पीछे नहीं हटते। यह स्पष्ट करता है कि संगठित समाज कोई भी लक्ष्य प्राप्त कर सकता है, चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हो।

प्रश्न 10. 1930 और 1931 के स्वतंत्रता दिवस समारोह में क्या अंतर था?

उत्तर: 1930 में स्वतंत्रता दिवस सीमित रूप से मनाया गया था, लेकिन 1931 में यह व्यापक और संगठित रूप से मनाया गया। इस बार दो हजार रुपये प्रचार में खर्च किए गए और हर क्षेत्र में झंडे फहराए गए। महिलाओं, युवाओं और नेताओं ने सक्रिय भागीदारी की। यह आयोजन जनता में स्वतंत्रता की भावना को और प्रबल बनाने वाला सिद्ध हुआ।

प्रश्न 11. स्वतंत्रता संग्राम में स्त्रियों की भागीदारी क्यों महत्वपूर्ण थी?

उत्तर: स्त्रियों की भागीदारी स्वतंत्रता संग्राम में समान अधिकार और राष्ट्र सेवा का प्रतीक थी। उन्होंने झंडा फहराया, जुलूस निकाले और लाठीचार्ज का सामना किया। उनकी सक्रियता ने यह सिद्ध किया कि देश की आजादी केवल पुरुषों का ही नहीं, बल्कि महिलाओं का भी साझा संघर्ष था। उनकी भूमिका ने समाज में नारी सशक्तिकरण की नींव रखी।

प्रश्न 12. सीताराम सेकसरिया को पद्मश्री सम्मान क्यों मिला?

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

उत्तर: सीताराम सेकसरिया को 1962 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें उनके सामाजिक, साहित्यिक और स्वतंत्रता संग्राम में दिए गए महान योगदान के लिए दिया गया। वे नारी शिक्षा, सांस्कृतिक upliftment और सामाजिक संस्थाओं के विकास में भी सक्रिय थे। उनका जीवन राष्ट्र सेवा और समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रश्न 13. लेखक ने स्वतंत्रता दिवस के किस दृश्य का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है?

उत्तर: लेखक ने क्षितीश चटर्जी के फटे सिर और बहते खून का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने लिखा कि यह दृश्य देखकर आँखें मिच जाती थीं। इसी बीच स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहरा रही थीं। यह दृश्य राष्ट्रप्रेम, साहस और त्याग का प्रतीक बन गया, जो पाठक को गहराई से प्रभावित करता है।

प्रश्न 14. क्या लेखक की डायरी आज के पाठकों के लिए प्रासंगिक है?

उत्तर: हाँ, लेखक की डायरी आज के पाठकों के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। यह स्वतंत्रता संग्राम के सजीव चित्र प्रस्तुत करती है और बताती है कि कैसे साहस, संगठन और देशप्रेम से असंभव भी संभव किया जा सकता है। यह युवाओं को प्रेरणा देती है कि वे राष्ट्रहित में योगदान दें और लोकतंत्र की रक्षा करें।

प्रश्न 15. 26 जनवरी 1931 को सभा को रोके जाने के बावजूद जनता की प्रतिक्रिया कैसी थी?

उत्तर: सभा को पुलिस ने रोकने की भरपूर कोशिश की, लेकिन जनता डटी रही। हजारों लोग मैदान में एकत्र हुए, स्त्रियाँ झंडा फहराने पहुँचीं और कार्यकर्ता लाठीचार्ज झेलते रहे। जनता का उत्साह पुलिस दमन के सामने भी कमजोर नहीं पड़ा। यह दृढ़ संकल्प और देशप्रेम का प्रतीक था, जो स्वतंत्रता संग्राम की सफलता का आधार बना।

प्रश्न 16. क्या यह पाठ केवल एक ऐतिहासिक घटना का वर्णन करता है?

उत्तर: नहीं, यह पाठ केवल ऐतिहासिक घटना का वर्णन नहीं करता, बल्कि यह जनजागरण, संघर्ष, साहस और संगठन का जीवंत उदाहरण भी है। इसमें नागरिकों की सहभागिता, स्त्रियों का योगदान और सुभाष बाबू जैसे नेताओं की भूमिका प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत की गई है। यह पाठ वर्तमान समाज के लिए भी शिक्षाप्रद है।

प्रश्न 17. 'डायरी का एक पन्ना' पाठ का शैक्षिक महत्व क्या है?

उत्तर: 'डायरी का एक पन्ना' पाठ का शैक्षिक महत्व इस बात में है कि यह छात्रों को स्वतंत्रता संग्राम की सजीव जानकारी देता है। इसमें देशभक्ति, साहस, संगठन और नारी सशक्तिकरण के गहरे संदेश हैं। यह पाठ न केवल ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत करता है, बल्कि सामाजिक और नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी देता है।

प्रश्न 18. लेखक की आत्मनिष्ठ शैली पाठ को कैसे प्रभावशाली बनाती है?

उत्तर: लेखक की आत्मनिष्ठ शैली पाठ को अत्यधिक प्रभावशाली बनाती है। उन्होंने जो देखा, महसूस किया और झेला, उसे डायरी में सीधे शब्दों में प्रस्तुत किया। इससे पाठक को घटनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। उनकी भावनाएँ, विचार और संघर्षपूर्ण अनुभव पाठ में गहराई और विश्वसनीयता जोड़ते हैं।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

प्रश्न 19. पाठ से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर: इस पाठ से हमें देशप्रेम, साहस, एकता और संगठित प्रयास की प्रेरणा मिलती है। यह दिखाता है कि कैसे नागरिकों की एकता और दृढ़ संकल्प से आज़ादी प्राप्त की गई। यह पाठ वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को जागरूक बनाता है कि वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग रहें।

प्रश्न 20. क्या यह पाठ आधुनिक भारत के नागरिकों के लिए संदेश देता है?

उत्तर: हाँ, यह पाठ आधुनिक भारत के नागरिकों को संगठन, साहस, कर्तव्यनिष्ठा और देशप्रेम का गहरा संदेश देता है। यह दिखाता है कि संघर्ष और बलिदान के बिना स्वतंत्रता संभव नहीं। वर्तमान समय में जब लोकतांत्रिक मूल्यों को चुनौतियाँ मिल रही हैं, तब यह पाठ हमें अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाता है।

सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना) पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. सीताराम सेकसरिया का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया का जन्म 1892 में राजस्थान के नवलगढ़ में हुआ था। वे बाद में कोलकाता चले गए जहाँ उनका अधिकांश जीवन बीता। उन्होंने अपने जीवन में स्वतंत्रता संग्राम, साहित्य, और समाजसेवा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रश्न 2. सीताराम सेकसरिया की शिक्षा किस प्रकार हुई थी?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया को औपचारिक विद्यालयी शिक्षा नहीं मिली, लेकिन उन्होंने स्वाध्याय के माध्यम से पढ़ना-लिखना सीखा। उनकी ज्ञान की प्यास ने उन्हें एक सशक्त लेखक और समाजसेवी के रूप में स्थापित किया।

प्रश्न 3. सीताराम सेकसरिया स्वतंत्रता संग्राम में कैसे शामिल हुए?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया महात्मा गांधी के आह्वान पर स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए। उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और जेल यात्रा भी की। उनका साहस और समर्पण उन्हें एक क्रांतिकारी कार्यकर्ता बनाता है।

प्रश्न 4. सीताराम सेकसरिया को कौन-कौन से प्रसिद्ध व्यक्ति प्रिय थे?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, और नेताजी सुभाषचंद्र बोस के करीबी थे। इन महान नेताओं के साथ उन्होंने देश की स्वतंत्रता और समाज सुधार के लिए कार्य किया।

प्रश्न 5. सीताराम सेकसरिया को कौन-सा राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ था?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया को उनके उत्कृष्ट सामाजिक और देश सेवा कार्यों के लिए भारत सरकार द्वारा 1962 में पद्मश्री सम्मान से नवाजा गया। यह सम्मान उनके योगदान की स्वीकृति है।

प्रश्न 6. सीताराम सेकसरिया का मुख्य योगदान किस क्षेत्र में रहा है?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया ने स्वतंत्रता संग्राम, महिला शिक्षा, और साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके कार्यों का प्रभाव आज भी समाज में देखा जा सकता है।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

प्रश्न 7. सीताराम सेकसरिया ने कौन-कौन सी रचनाएँ लिखीं?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया की प्रमुख रचनाएँ हैं – स्मृतिकण, मन की बात, बीता युग, नयी याद, और एक कार्यकर्ता की डायरी (दो भागों में)। इन रचनाओं में उनके अनुभवों और भावनाओं की झलक मिलती है।

प्रश्न 8. सीताराम सेकसरिया की 'डायरी' का क्या महत्व है?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया की 'डायरी' स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनके प्रत्यक्ष अनुभवों का लेखाजोखा है। यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है, जिसमें 26 जनवरी 1931 की घटनाओं का सजीव चित्रण है।

प्रश्न 9. 26 जनवरी 1931 को सीताराम सेकसरिया ने क्या देखा?

उत्तर: 26 जनवरी 1931 को सीताराम सेकसरिया ने कोलकाता में स्वतंत्रता दिवस की तैयारी, झंडा फहराने की कोशिशें, और पुलिस की क्रूरता का प्रत्यक्ष अनुभव किया। यह सब उन्होंने अपनी डायरी में दर्ज किया।

प्रश्न 10. सीताराम सेकसरिया महिलाओं की भूमिका को कैसे देखते थे?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया महिलाओं की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने महिला शिक्षा का समर्थन किया और स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी की सराहना की, जो उनकी विचारशीलता को दर्शाता है।

प्रश्न 11. सीताराम सेकसरिया ने नारी शिक्षा में क्या योगदान दिया?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया ने कई नारी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना व संचालन किया। उन्होंने महिलाओं को शिक्षित कर समाज में उनका स्थान सुदृढ़ करने की दिशा में कार्य किया।

प्रश्न 12. सीताराम सेकसरिया किस प्रकार की संस्थाओं से जुड़े थे?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया कई साहित्यिक, सांस्कृतिक, और शैक्षणिक संस्थाओं के प्रेरक, संस्थापक और संचालक थे। उन्होंने समाज में चेतना और सुधार लाने हेतु अनेक कार्य किए।

प्रश्न 13. सीताराम सेकसरिया का कोलकाता से क्या संबंध था?

उत्तर: हालाँकि सीताराम सेकसरिया का जन्म नवलगढ़ में हुआ था, लेकिन उनका अधिकांश जीवन कोलकाता में बीता। वहीं उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन और समाजसेवा से जुड़े कई कार्य किए।

प्रश्न 14. नेताजी सुभाषचंद्र बोस के साथ सीताराम सेकसरिया के संबंध कैसे थे?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया नेताजी सुभाषचंद्र बोस के निकट सहयोगी थे। वे उनके आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे और उनके विचारों से प्रेरित होकर कार्य करते थे।

प्रश्न 15. सीताराम सेकसरिया ने किस प्रकार के आंदोलनों में भाग लिया?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया ने सत्याग्रह आंदोलन सहित कई राष्ट्रवादी आंदोलनों में भाग लिया। उन्होंने पुलिस की क्रूरता का सामना किया और जेल भी गए, पर अपने संकल्प से पीछे नहीं हटे।

प्रश्न 16. 'एक कार्यकर्ता की डायरी' किसकी रचना है और उसका महत्व क्या है?

उत्तर: 'एक कार्यकर्ता की डायरी' सीताराम सेकसरिया की प्रसिद्ध रचना है। इसमें उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं और समाज में घट रही बातों को डायरी शैली में दर्ज किया है।

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

प्रश्न 17. सीताराम सेकसरिया की लेखन शैली की क्या विशेषता है?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया की लेखन शैली आत्मकथात्मक, सजीव और अनुभव-संपन्न है। वे घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करते हैं जिससे पाठक को ऐतिहासिक परिस्थितियाँ भली-भांति समझ में आती हैं।

प्रश्न 18. सीताराम सेकसरिया को प्रेरणा कहाँ से मिली?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया को प्रेरणा महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर और नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे महापुरुषों से मिली। उन्होंने इन नेताओं की छाया में राष्ट्र सेवा और सामाजिक कार्य किए।

प्रश्न 19. सीताराम सेकसरिया ने अपने अनुभव कैसे साझा किए?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया ने अपने जीवन अनुभवों को डायरी और लेखन के माध्यम से साझा किया। उनकी रचनाएँ एक प्रेरणास्रोत हैं जो देशभक्ति, सेवा और संघर्ष की भावना जगाती हैं।

प्रश्न 20. आज के समाज में सीताराम सेकसरिया की प्रासंगिकता क्या है?

उत्तर: सीताराम सेकसरिया आज भी समाज के लिए प्रेरणा हैं। उनका जीवन संघर्ष, सेवा, और स्वदेश प्रेम का उदाहरण है। उनके विचार और कार्य आज के युवाओं को दिशा देने का कार्य करते हैं।

सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना) पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. सीताराम सेकसरिया का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

- A. 1885, जयपुर
- B. 1892, नवलगढ़
- C. 1900, कोलकाता
- D. 1895, उदयपुर

उत्तर: B. 1892, नवलगढ़

2. सीताराम सेकसरिया का अधिकांश जीवन कहाँ बीता?

- A. मथुरा
- B. दिल्ली
- C. कोलकाता
- D. मुंबई

उत्तर: C. कोलकाता

3. सीताराम सेकसरिया किस आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल थे?

- A. स्वदेशी आंदोलन
- B. चंपारण सत्याग्रह
- C. भारत छोड़ो आंदोलन
- D. सत्याग्रह आंदोलन

उत्तर: D. सत्याग्रह आंदोलन

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

4. सीताराम सेकसरिया को कौन-सा राष्ट्रीय सम्मान मिला था?

- A. पद्म भूषण
- B. पद्म श्री
- C. भारत रत्न
- D. राष्ट्रीय पुरस्कार

उत्तर: B. पद्म श्री

5. सीताराम सेकसरिया किस वर्ष पद्म श्री से सम्मानित हुए?

- A. 1965
- B. 1960
- C. 1962
- D. 1970

उत्तर: C. 1962

6. सीताराम सेकसरिया की प्रमुख कृतियों में कौन-सी शामिल है?

- A. गबन
- B. गोदान
- C. मन की बात
- D. युगांत

उत्तर: C. मन की बात

7. 'डायरी का एक पन्ना' किस तिथि की घटना है?

- A. 15 अगस्त 1947
- B. 26 जनवरी 1931
- C. 2 अक्टूबर 1930
- D. 26 जनवरी 1950

उत्तर: B. 26 जनवरी 1931

8. सुभाष चंद्र बोस के जुलूस का नेतृत्व किसने किया था?

- A. हरिश्चंद्र सिंह
- B. पुरुषोत्तम राय
- C. पूर्णोदास
- D. अविनाश बाबू

उत्तर: C. पूर्णोदास

9. तारा सुंदरी पार्क में झंडा फहराने गए कौन थे?

- A. हरिश्चंद्र सिंह
- B. जानकी देवी
- C. सीताराम सेकसरिया

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

D. सुभाष बाबू

उत्तर: A. हरिश्चंद्र सिंह

10. सीताराम सेकसरिया को शिक्षा कहाँ से प्राप्त हुई?

A. गुरुकुल

B. सरकारी विद्यालय

C. निजी शिक्षण

D. स्वाध्याय

उत्तर: D. स्वाध्याय

11. सीताराम सेकसरिया किनके करीबी थे?

A. सावरकर

B. रवींद्रनाथ ठाकुर

C. बाल गंगाधर तिलक

D. अंबेडकर

उत्तर: B. रवींद्रनाथ ठाकुर

12. स्त्रियों के जुलूस का नेतृत्व किसने किया?

A. मदालसा

B. जानकी देवी

C. विमल प्रतिभा

D. प्रतिभा देवी

उत्तर: C. विमल प्रतिभा

13. किस स्थान को पुलिस ने सुबह से ही घेर लिया था?

A. चौरंगी

B. मोनुमेंट

C. तारा सुंदरी पार्क

D. आनंद पार्क

उत्तर: B. मोनुमेंट

14. गुजराती सेविका संघ के जुलूस में कौन शामिल थीं?

A. पुरुषोत्तम राय

B. जानकी देवी और मदालसा

C. विमल प्रतिभा

D. हरिश्चंद्र सिंह

उत्तर: B. जानकी देवी और मदालसा

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

15. सीताराम सेकसरिया का किस क्षेत्र में योगदान नहीं था?

- A. साहित्य
- B. संगीत
- C. नारी शिक्षा
- D. स्वतंत्रता आंदोलन

उत्तर: B. संगीत

16. पुलिस द्वारा सबसे पहले किस पर लाठियाँ चलाई गईं?

- A. विमल प्रतिभा
- B. पूर्णोदास
- C. सुभाष बाबू
- D. जानकी देवी

उत्तर: C. सुभाष बाबू

17. किसे लालबाजार लॉकअप में भेजा गया?

- A. सीताराम सेकसरिया
- B. पुरुषोत्तम राय
- C. सुभाष बाबू
- D. हरिश्चंद्र सिंह

उत्तर: C. सुभाष बाबू

18. "स्मृतिकण" किसकी रचना है?

- A. रवींद्रनाथ ठाकुर
- B. सुभाष चंद्र बोस
- C. सीताराम सेकसरिया
- D. हरिश्चंद्र सिंह

उत्तर: C. सीताराम सेकसरिया

19. सुभाष बाबू किस नारे का जोर से उच्चारण कर रहे थे?

- A. भारत माता की जय
- B. जय हिंद
- C. वंदे मातरम्
- D. इंकलाब जिंदाबाद

उत्तर: C. वंदे मातरम्

20. सीताराम सेकसरिया की डायरी में किस घटना का वर्णन है?

- A. भारत छोड़ो आंदोलन
- B. असहयोग आंदोलन

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

C. 26 जनवरी 1931 की स्वतंत्रता दिवस सभा

D. दिल्ली चलो मार्च

उत्तर: C. 26 जनवरी 1931 की स्वतंत्रता दिवस सभा

पाठ 9 - (डायरी का एक पन्ना) - पाठ पर आधारित प्रश्न True or False (सही या गलत)

1. सीताराम सेकसरिया का जन्म 1892 में नवलगढ़ में हुआ था।

उत्तर: सही

2. सीताराम सेकसरिया का अधिकांश जीवन मुंबई में बीता था।

उत्तर: गलत (उनका जीवन कोलकाता में बीता)

3. 'डायरी का एक पन्ना' 26 जनवरी 1931 की घटना का वर्णन करता है।

उत्तर: सही

4. विमल प्रतिभा पुरुषों के जुलूस का नेतृत्व कर रही थीं।

उत्तर: गलत (उन्होंने स्त्रियों के जुलूस का नेतृत्व किया)

5. जानकी देवी और मदालसा गुजराती सेविका संघ से जुड़ी थीं।

उत्तर: सही

6. सीताराम सेकसरिया ने अंग्रेजी शासन का समर्थन किया था।

उत्तर: गलत (उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया)

7. पूर्णदास ने सुभाष चंद्र बोस के जुलूस का नेतृत्व किया।

उत्तर: सही

8. तारा सुंदरी पार्क में झंडा फहराने की कोशिश हुई थी।

उत्तर: सही

9. रवींद्रनाथ ठाकुर सीताराम सेकसरिया के मित्र थे।

उत्तर: सही

10. सीताराम सेकसरिया को संगीत में गहरी रुचि थी।

उत्तर: गलत (साहित्य, समाजसेवा और शिक्षा में रुचि थी)

11. पुलिस ने जुलूस निकालने वालों पर कोई कार्रवाई नहीं की।

उत्तर: गलत (पुलिस ने लाठीचार्ज किया और गिरफ्तारियाँ की)

12. सुभाष चंद्र बोस को लालबाजार लॉकअप में भेजा गया था।

उत्तर: सही

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

13. 'स्मृतिकण' पुस्तक सीताराम सेकसरिया द्वारा लिखी गई है।

उत्तर: सही

14. सीताराम सेकसरिया को पद्म श्री सम्मान नहीं मिला था।

उत्तर: गलत (उन्हें 1962 में पद्म श्री मिला)

15. 'डायरी का एक पन्ना' एक काल्पनिक कहानी है।

उत्तर: गलत (यह एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित विवरण है)

16. विमल प्रतिभा को पुलिस ने पीट-पीट कर गिरा दिया था।

उत्तर: सही

17. मोनुमेंट के पास पुलिस ने घेराबंदी नहीं की थी।

उत्तर: गलत (पुलिस ने सुबह से ही घेराबंदी कर दी थी)

18. पुरुषोत्तम राय और हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने के लिए आगे बढ़े थे।

उत्तर: सही

19. 'डायरी का एक पन्ना' सीताराम सेकसरिया के जीवन की कल्पनात्मक घटना है।

उत्तर: गलत (यह उनके लिखित संस्मरण पर आधारित है)

20. सीताराम सेकसरिया ने नारी शिक्षा को बढ़ावा दिया।

उत्तर: सही

पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना) पर आधारित - रिक्त स्थान भरिए:-

- सीताराम सेकसरिया का जन्म _____ में हुआ था।

उत्तर: 1892

- 'डायरी का एक पन्ना' की घटना _____ जनवरी 1931 की है।

उत्तर: 26

- विमल प्रतिभा _____ के जुलूस का नेतृत्व कर रही थीं।

उत्तर: स्त्रियों

- तारा सुंदरी पार्क में _____ फहराने का प्रयास किया गया था।

उत्तर: राष्ट्रीय झंडा

- सुभाष चंद्र बोस को गिरफ्तार कर _____ ले जाया गया।

उत्तर: लालबाजार लॉकअप

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

- सीताराम सेकसरिया को वर्ष _____ में पद्म श्री से सम्मानित किया गया।
उत्तर: 1962
- जानकी देवी और मदालसा _____ सेविका संघ से जुडी थीं।
उत्तर: गुजराती
- पुरुषोत्तम राय और _____ सिंह ने झंडा फहराने का प्रयास किया।
उत्तर: हरिश्चंद्र
- पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर _____ चार्ज किया।
उत्तर: लाठी
- 'डायरी का एक पन्ना' एक _____ पर आधारित विवरण है।
उत्तर: ऐतिहासिक घटना
- सुभाष चंद्र बोस का भाषण _____ के मैदान में होना था।
उत्तर: मोनुमेंट
- विमल प्रतिभा को पुलिस ने लाठियों से पीटकर _____ दिया।
उत्तर: गिरा
- सीताराम सेकसरिया ने _____ और समाजसेवा को जीवन का लक्ष्य बनाया।
उत्तर: साहित्य
- तारा सुंदरी पार्क में झंडा फहराते समय कई लोगों को _____ किया गया।
उत्तर: गिरफ्तार
- कोलकाता की गलियों में _____ मार्च निकाला गया।
उत्तर: स्वतंत्रता संग्रामियों का
- 'डायरी का एक पन्ना' एक _____ शैली में लिखा गया संस्मरण है।
उत्तर: डायरी
- मोनुमेंट के पास पुलिस ने सुबह से ही _____ कर दी थी।
उत्तर: घेराबंदी
- सीताराम सेकसरिया ने ' _____ ' नामक पुस्तक लिखी।
उत्तर: स्मृतिकण
- जानकी देवी, मदालसा और विमल प्रतिभा ने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में _____ किया।
उत्तर: प्रेरित

Ncert Solutions of पाठ 9 सीताराम सेकसरिया (डायरी का एक पन्ना)

- सीताराम सेकसरिया को _____ के प्रति विशेष लगाव था।
उत्तर: भारतीय संस्कृति